# स्वामी विवेकानन्द के विचारों में राष्ट्रवाद की भावना

रेणु बाला, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकटेश्वर युनिवर्सिटी, गजरोला यू. पी.।
डॉ रमेश तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकटेश्वर युनिवर्सिटी, गजरोला यू. पी.।

**सार**

स्वामी विवेकानंद को आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जनक कहा जा सकता है। वे सच्चे राष्ट्रवादी थे। स्वामी विवेकानंद के समकालीन सामाजिक और धार्मिक सुधारक ने लोगों को तत्वमीमांसा के बारे में पढ़ाया लेकिन विवेकानंद का सिद्धांत अलग था। वह कहते हैं, ''खाली पेट धर्म के लिए अच्छा नहीं है।'' उन्होंने माना कि हमारा पहला कर्तव्य मातृभूमि के लिए कर्तव्य है। उन्होंने मातृभूमि को पूजा के लिए देवता के रूप में लिया। उन्होंने हर भारतीय को अपने भाई के रूप में लिया। उनका मानना था कि भारत के पतन का मुख्य कारण गरीब जनता का शोषण है। गरीबों और दलितों के उत्थान से हम राष्ट्रवाद की स्थापना कर सकते हैं। उन्होंने जनता के साथ–साथ भारतीय युवाओं का आह्वान किया कि उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। उनका मानना था कि भारतीय लोगों में राष्ट्रवाद की भावना पैदा करना बहुत जरूरी है। व्याख्यान और लेखन के द्वारा विवेकानंद ने भारतीय लोगों को गर्व, सांस्कृतिक आत्मविश्वास की भावना प्रदान की। राम कृष्ण मिशन भी भारतीयों की साजिश का एक केंद्रीय बिंदु बन गया। उन्होंने गांधीजी, सुभाष चंद्र बोस, आरएन टैगोर जैसे भारतीय क्रांतिकारियों पर भी प्रभाव डाला।

**मुख्य शब्द**

भारतीय, देशभक्ति, राष्ट्रवाद

**परिचय**

स्वामी विवेकानंद ने अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश राजनीतिक स्वायत्तता का विरोध किया। उनके राष्ट्रवादी आंदोलन ने ब्रिटिश सम्राट के विस्थापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विवेकानंद का राष्ट्रवाद अध्यात्मवाद, देशभक्ति और धर्म पर आधारित था। उन्होंने भारतीयों को फिर से वेदों, पुराणों, गीता और उनकी महान अतीत की विरासत से परिचित कराया। वे एक महान देशभक्त भी थे। उन्होंने निःस्वार्थ सेवा, मानवीय गरिमा की भावना, राष्ट्रीय एकता के लिए पुरुषत्व पर बल दिया। उनका मानना था कि भारत में धर्म स्थिरता और एकीकरण में एक रचनात्मक शक्ति रहा है। उन्होंने भारतीय लोगों को शक्ति और निडरता का विचार दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था, पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता, बाल विवाह आदि जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए भी काम किया, जो भारतीय राष्ट्रवाद में प्रतिरोध थे।

वे शिक्षा को सभी सामाजिक धार्मिक समस्याओं की रामबाण औषधि मानते थे। वह न केवल राष्ट्रवाद में बल्कि अंतर्राष्ट्रीयता में भी विश्वास करते थे। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म शिखर सम्मेलन में, उन्होंने पूरी दुनिया को सार्वभौमिक भाईचारे, हिंदू धर्म आदि का पाठ पढ़ाया। डॉ राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा था कि ''राष्ट्रवाद एक राजनीतिक धर्म है जो पुरुषों के दिलों और इच्छाओं को जगाता है और उन्हें सेवा और आत्म–बलिदान के लिए प्रेरित करता है। इस तरह से कि हाल के दिनों में किसी भी विशुद्ध धार्मिक आंदोलन ने नहीं किया है।''

भारत प्राचीन भूमि में से एक है जहाँ संस्कृति, दर्शन, सभ्यता, धर्म ने जन्म लिया और शिखर पर पहुँचे। यह विशेष रूप से विभिन्न भौगोलिक उतार–चढ़ावों के साथ पूरी तरह से धन्य भूमि है। यह वह स्थान है जहां कई लोगों ने अपनी विभिन्न संस्कृतियों के साथ इसमें आत्मसात किया। इसने कई क्रूर आक्रमणों का सामना किया लेकिन दृढ़ और एकजुट रहा।

उनका मानना था कि भारतीय लोगों में राष्ट्रवाद की भावना पैदा करना बहुत महत्वपूर्ण है। विवेकानंद इस सिद्धांत में विश्वास करते थे कि विविधता में एकता ही सृजन की योजना है। उनका मानना था कि एक समय में सभी धर्म समान होते हैं। उन्होंने धार्मिक दृष्टिकोण को अनंत को साकार करने के प्रयास के रूप में लिया। अनेकता में एकता राष्ट्र निर्माण में सहायक होती है। उन्होंने कट्टरता पर व्यंग्य भी किया। वह कहते हैं, ''मैं एक हिंदू हूं। मैं अपने कुएं में बैठा हूं और सोच रहा हूं कि पूरी दुनिया मेरा छोटा कुआं है। ईसाई अपने छोटे से कुएं में बैठता है और सोचता है कि यह पूरी दुनिया है।''

इस प्रकार की सोच राष्ट्रवाद में बाधक है। विवेकानंद का मानना था कि एक बिंदु पर सभी एक स्थान पर विलीन हो जाते हैं। उन्होंने सभी पर एक धर्म नहीं थोपा, लेकिन उन्होंने कहा कि सभी धर्मों का मुख्य आधार एक है। हमें एक दूसरे की आलोचना नहीं करनी चाहिए, वे कहते हैं, ''यदि एक धर्म सत्य है तो अन्य सभी सत्य होने चाहिए।'' वह कहता है कि मैंने सभी धर्मों का अध्ययन किया जैसे कि मोहम्मदन, बौद्ध, ईसाई और अन्य, लेकिन मुझे वही शिक्षाएँ मिलती हैं जो मुझे मेरे धर्म द्वारा सिखाई गई थीं। वह हिंदू धर्म की भी प्रशंसा करता है। वे कहते हैं, ''मैं धन्य हूं कि मैंने ऐसे महान हिंदू धर्म में जन्म लिया जो सभी धर्मों को आत्मसात करता है।''

उनके गुरु ने विवेकानंद को सिखाया कि मनुष्य की सेवा भगवान की सेवा है। इसलिए, विवेकानंद कहते हैं, भगवान को देखना सबसे अच्छा तरीका था। गरीबों, दलितों, बीमारों और अज्ञानियों में और उनकी सेवा करने के लिए। ''उनका मानना था कि भारत में धर्म स्थिरता और राष्ट्रीय एकता में एक रचनात्मक शक्ति रहा है। उन्होंने भारतीयों को ताकत और निडरता का विचार दिया। उन्होंने घोषणा की, मेरे धर्म का सार शक्ति है। मनुष्य को सभी बंधनों से मुक्त करता है और उसे मुक्त करता है। उन्होंने बताया कि यह वह भूमि थी जिसने पूरी दुनिया को दर्शन, धर्म का परिचय दिया। उन्होंने अनंत वेदों, पुराणों, उपनिषदों, गीता, ज्ञान के अंतिम स्रोत के बारे में बताया किनारा।

विवेकानंद का मानना था कि वेद किसी व्यक्ति का कथन नहीं है। वेद शाश्वत हैं। उनकी डेट कभी फिक्स नहीं होती। वेद स्वयं सत्ता हैं। कोई आदि और कोई अंत नहीं है। भारतीय दर्शन की उत्पत्ति का वेदों में आसानी से पता लगाया जा सकता है। पुराण, उपनिषद और भगवद्गीता भारतीय दर्शन के आधार हैं।

**राष्ट्रवाद और स्वामी विवेकानंद**

विवेकानंद भगवद्गीता को सर्वश्रेष्ठ पवित्र ग्रंथों में से एक मानते थे। उन्होंने 26, 28 और 29 मई को सैन फ्रांसिस्को में और 1 अप्रैल, 1900 को कैलिफोर्निया में गीता पर व्याख्यान दिया। विवेकानंद भी एक महान देशभक्त थे। उन्होंने निःस्वार्थ सेवा, मानवीय गरिमा की भावना, राष्ट्रीय एकता के लिए पुरुषत्व पर बल दिया।

व्याख्यान और लेखन के द्वारा विवेकानंद ने भारतीय लोगों को गर्व, सांस्कृतिक आत्मविश्वास की भावना प्रदान की। विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन भी भारतीय साजिश के केंद्रीय बिंदुओं में से एक था। उन्होंने गांधीजी, सुभाष चंद्र बोस, आरएन टैगोर जैसे कई भारतीय क्रांतिकारियों को भी प्रभावित किया। विवेकानंद के बारे में आरएन टैगोर ने कहा, यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो विवेकानंद का अध्ययन करें।

उन्होंने सामाजिक दृष्टिकोण पर राष्ट्रवाद की दिशा में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। उन्होंने माना कि जाति व्यवस्था, बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा राष्ट्र की एकता में प्रतिबंध हैं। जाति व्यवस्था भारत में 19वीं सदी की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई में से एक थी।

जाति व्यवस्था व्यक्ति के पेशे या नौकरी के काम से बनी थी लेकिन 19वीं शताब्दी में इसने दूसरा रूप ले लिया था। अब व्यक्ति की जाति उसके जन्म से तय होती थी । व्यक्तिगत जाति ने उसकी सामाजिक स्थिति का निर्धारण किया।

ऊंची जाति के लोग नीची जाति के लोगों से नफरत करते थे। निम्न जाति के लोगों का उनके द्वारा शोषण किया जाता था। उनका कोई अधिकार नहीं था। उन्हें शारीरिक के साथ–साथ मानसिक रूप से भी प्रताड़ित किया गया।

विवेकानंद जाति व्यवस्था से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने जाति व्यवस्था की भी निंदा की। उन्होंने जाति व्यवस्था को हमारी प्रगति में एक बाधा के रूप में लिया। इसमें कोई शक नहीं कि वे वर्ण व्यवस्था को मानते थे लेकिन वेदों में वर्णित अनुसार। लेकिन वे इस व्यवस्था की बुराइयों के खिलाफ थे, खासकर छुआछूत इसका सबसे बुरा हिस्सा है। उन्होंने इस प्रकार के ''डोंट टच'' की आलोचना की ।

वह समाज से इस प्रकार की हठधर्मिता को समाप्त करना चाहते थे। बाल विवाह एक निश्चित उम्र तक पहुंचने से पहले किसी व्यक्ति का औपचारिक विवाह होता है। यह उस युग की एक प्रमुख बुराई भी थी। गरीबी, दहेज, दुल्हन की कीमत, सामाजिक दबाव, राजनीति और वित्तीय संबंध, अपहरण आदि के कारण किशोरों को शादी के लिए कास्ट किया गया था। इसके लिए कई कारण जिम्मेदार थे लेकिन सभी परिणाम बालिकाओं को भुगतने होंगे। सती प्रथा एक ऐसी व्यवस्था या धार्मिक वर्जना थी जिसमें पत्नियां अपने मृत पति के साथ जलने के लिए खुद को फेंक देती थीं।

दरअसल इसकी शुरुआत मुस्लिम आक्रमणकारियों के आक्रमण के बाद हुई थी। लेकिन समय के साथ यह एक धार्मिक वर्जना बन गया। बंगाल में इसका प्रकोप अधिक था। नारी को प्राचीन काल से ही यौन सुख के रूप में माना जाता रहा है। उसे समाज से अलग रखा गया था। पर्दा प्रथा ने उसे और अधिक दयनीय बनाने में भी उसकी भूमिका निभाई। इस बुराई के लिए आक्रमणकारी भी जिम्मेदार थे। इसलिए महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा गया। वे घर की चार दीवारी से बंधे थे। यदि हम स्त्री की शिक्षा की स्थिति की बात करें तो वह बहुत दयनीय थी।

उनकी पढ़ाई पर किसी का ध्यान नहीं गया। वे घर की चार दीवारी से बंधे थे। उन्हें खाना पकाने, सफाई, चाइल्डकैअर, हैंडस्पिनिंग जैसी घरेलू शिक्षा का अध्ययन किया गया। अगर उसका परिवार पढ़ाई का खर्च वहन कर सकता था तो उन्होंने घर पर एक निजी ट्यूटर को काम पर रखा। और 9 या 10 साल की उम्र में उन्हें शादीशुदा जिंदगी के लिए धकेल दिया गया। अब बोझ उसके पति के परिवार पर आ गया। हिंदू जैन गुरुकुल व्यवस्था, मदरसा में महिलाओं की शिक्षा की पेशकश नहीं थी। 1881 में पहली जनगणना में महिला साक्षरता 0.5ः दर्ज की गई थी, जो 1901 में 0.6ः तक पहुंच गई थी। सभी मामलों में कन्या भ्रुण हत्या प्रचलित नहीं थी। यह राजपूतों और गरीब लोगों में प्रचलित था। उन्होंने अपनी बेटियों को मार डाला, वे आक्रमणकारियों के शिकार बन गए। गरीब लोगों का एक और कारण दहेज प्रथा है। उनके पास बेटी की शादी पर खर्च करने के लिए ज्यादा रकम नहीं थी।

इसलिए गरीबी के डर और अपमान के डर से उन्होंने अपनी बेटियों को बहुत ही प्रारंभिक अवस्था में मार डाला .. लेकिन राजा राम मोहनराय, स्वामी विवेकानंद, केशब चंदर सेन आदि जैसे कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इन बुराइयों का विरोध किया। और उनके प्रयासों के कारण बाल विवाह रोक दिया गया। 19वीं सदी के अंत में इस अपराध को समाप्त कर दिया गया था। विवेकानंद एक हिंदू सुधारवादी संगठन ब्रह्म समाज में भी शामिल हुए, जिसने बाल विवाह, सती पार्थ, कन्या भ्रूण हत्या आदि को खत्म करने के लिए काम किया। उन्होंने लोगों को इन बुराइयों के बारे में जागरूक किया जो भारतीय पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार थे। वह शिक्षा पर भी ध्यान देता है।

उनका मानना था कि शिक्षा सभी बुराइयों का रामबाण इलाज है। उनका मानना था कि शिक्षा से सामाजिक आर्थिक परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने उस शिक्षा का समर्थन किया जिससे चरित्र का निर्माण होता है। विवेकानंद ने कहाः ''प्रकृति को शिक्षक बनने दोष।'' उन्होंने हमेशा कहा कि शिक्षा मानवता का विकास है। पहले रोटी और फिर धर्म।

विवेकानंद के समकालीन सुधारकों ने लोगों को तत्वमीमांसा के बारे में पढ़ाया लेकिन विवेकानंद का सिद्धांत अलग था। वे कहते हैं, ''खाली पेट धर्म के लिए अच्छा नहीं है।'' इसलिए उन्होंने तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया। क्योंकि उन्होंने ऐसी मशीनरी का वर्णन किया है जो सबसे गरीब और मतलबी लोगों के दरवाजे तक महान विचारों को लाएगी। उन्होंने महिलाओं के शिक्षा के अधिकार के लिए भी काम किया। उन्होंने महिलाओं की भूमिका का महिमामंडन किया। वे नारी को सृजन शक्ति मानते थे। उन्होंने कहा कि अगर महिलाएं शिक्षित हैं, तो वे समाज को शिक्षित करती हैं।

विवेकानंद ने कहाः ''पांच सौ प्रेरित पुरुषों के साथ मुझे भारत को बदलने में 50 साल लगेंगे। प्रेरित महिलाओं के साथ इसमें कुछ साल लगेंगे''। वह महिलाओं को दिए जाने वाले सम्मान के समर्थन में थे। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र अपनी महिलाओं के सम्मान के साथ महान राष्ट्र नहीं हो सकता। उन्होंने सीता, सावित्री, दानयंती आदि का उदाहरण दिया। निस्संदेह, वे परिवार के पारंपरिक मूल्य में विश्वास करते थे लेकिन उनकी अधीनता के खिलाफ। उन्होंने पूरे भारत में कई स्कूलों के साथ–साथ सार्वजनिक पुस्तकालय भी खोले जिससे एक आम आदमी आसानी से पढ़ सकता था।

उन्होंने जमशेद टाटा को एक शोध और शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने के लिए भी कहा। टाटा ने उन्हें संस्था के प्रमुख के रूप में पेश किया, अब उन्होंने फिर से मना कर दिया और अपनी दृढ़ता दिखाई। उन्होंने माना कि शिक्षा स्वतंत्रता के सुनहरे दरवाजे को खोलने का एक शक्तिशाली उपकरण है जो दुनिया को बदल सकता है। मई 1897 को, उन्होंने कलकत्ता में सामाजिक सेवाओं के लिए राम कृष्ण मिशन की स्थापना की। इसके आदर्श कर्म योग पर आधारित हैं।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक कर्म का अपना महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अपना विशेष कर्तव्य है। हिंदू एक छात्र के रूप में जीवन शुरू करता है, फिर वह शादी करता है, एक गृहस्थ बन जाता है, बुढ़ापे में वह सेवानिवृत्त हो जाता है और दुनिया को त्याग देता है और जीवन के इन चरणों में से प्रत्येक के लिए संन्यासी बन जाता है, कुछ कर्तव्य जुड़े होते हैं। इनमें से कोई भी चरण दूसरे से श्रेष्ठ नहीं है। गृहस्थ का जीवन ब्रह्मचारी जितना ही शांत होता है। स्वीपर राजा के समान महान और प्रतापी होता है। उन्होंने गृहस्थ को कर्म के फल के बारे में सोचे बिना अपना काम करने की सलाह दी। इसमें कोई शक नहीं, यह बहुत ही विशिष्ट कार्य है। इससे वह एक ही समय गृहस्थ के साथ–साथ संन्यासी का जीवन जी सकती है।

विवेकानंद न केवल राष्ट्रवाद में बल्कि अंतर्राष्ट्रीयवाद में भी विश्वास करते थे। 11 सितंबर 1893 को विश्व के कोलंबियाई प्रदर्शनी के हिस्से के रूप में शिकागो के कला संस्थानश् में, उन्होंने अमेरिका की बहनों और भाइयों के साथ अपना भाषण शुरू किया। इस वाक्य पर दर्शकों ने लगातार दो मिनट तक ताली बजाई। उन्होंने भारत की सहिष्णुता और हिंदू धर्म की सार्वभौमिक स्वीकृति की शिक्षा दी। विवेकानंद ने प्रेस में व्यापक ध्यान आकर्षित किया जिसने उन्हें 'भारत से चक्रवाती भिक्षु' कहा। विवेकानंद ने 27 सितंबर 1893 को संसद के अंत तक हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और धर्मों के बीच सद्भाव पर बात की। इसके बाद विवेकानंद ने अमेरिका के कई शहरों का दौरा किया।

उन्होंने ब्रुकलिन एथिकल सोसाइटी में टिप्पणी की, ''मेरे पास पश्चिम के लिए एक संदेश है क्योंकि बुद्ध के पास पूर्व के लिए एक संदेश था।'' उन्होंने 1894 में न्यूयॉर्क में 'वेदांत सोसाइटी' की स्थापना की। उन्होंने निजी व्याख्यान, योग और वेदांत की कक्षाएं भी दीं। उन्होंने दो बार इंग्लैंड का दौरा किया। वहां एक बैठक में मार्गरेट एलिजाबेथ एक नए नाम 'सिस्टर निवेदिता' के साथ उनकी शिष्या बनीं।

मैक्समूलर से उनकी मुलाकात हुई। उन्होंने जर्मनी की भी यात्रा की। उन्हें हार्वर्ड और कोलंबिया विश्वविद्यालय में अकादमिक पदों की पेशकश की गई, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। यह एक साधु के रूप में उनकी प्रतिबद्धता और महानता को दर्शाता है। उन्होंने कई अनुयायियों को आकर्षित किया और प्रशंसा की। उन्होंने लॉस एंजिल्स में वेदांत के छात्र के लिए एक 'शांति आश्रम' बनाया। राष्ट्र के एकीकरण के उनके विचार 21वीं सदी में भी काम कर रहे हैं। अंत में, हम कह सकते हैं कि विवेकानंद एक सच्चे राष्ट्रवादी हैं।

## निष्कर्ष

महान अतीत की विरासत के कारण, इसने कुछ महान व्यक्तित्वों को दिया जिन्होंने दुनिया को एकता, मानवता, भाईचारे आदि का पाठ पढ़ाया। विवेकानंद उनमें से एक हैं। उन्हें आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जनक कहा जा सकता है। उन्होंने माना कि हमारा पहला कर्तव्य है, मातृभूमि के लिए हमारा कर्तव्य। उन्होंने मातृभूमि को पूजा के लिए देवता के रूप में लिया। उन्होंने सभी भारतीयों के बीच एक राष्ट्रीय चेतना पैदा की। उन्होंने आधुनिक समय में अतीत की भारतीय संस्कृति की समृद्धि दिखाई। वे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक थे। वह ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सामाजिक, आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से राष्ट्र को एकजुट करने में बहुत अच्छा काम किया।

## संदर्भ

1. स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनाएँ {मायावती स्मारक संस्करण}, भाग–1, 1936.
2. स्वामी विवेकानंद का चयनित भाषण।
3. ''जनता के प्रति हमारा कर्तव्य'', स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण कृतियाँ, खंड–टप्।
4. बीसी पाल, भारतीय राष्ट्रवाद की भावना।
5. स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनाएँ {मायावती स्मारक संस्करण}, भाग– प्ट, 1971।
6. स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनाएँ {मायावती स्मारक संस्करण}, भाग–टप्प्, 1971।